अंतरा-शब्दशक्ति

परिवर्तन के चक्रवात

गीत-नवगीत संग्रह

सुनीता लुल्ला

परिवर्तन के चक्रवात

(काव्य संग्रह)

सुनीता लुल्ला

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-96-4

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- सुनीता लुल्ला

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Parivartan ke Chakrawat by Sunita Lulla

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अपने बारे में,....

अपने माता पिता की दूसरी संतान,... और छोटी चार बहनें भी,.. मां की निरंतर अस्वस्थता के कारण छोटी वय में ही जिम्मेदारियां सम्हालीं, किन्तु फिर भी खूब मस्ती, खेलकूद और हुल्लड दंगों के बीच बचपन गुजरा, माता पिता का भरपूर स्नेह मिला,.. पिता से विशेष लगाव रहा,..

काव्य यात्रा बचपन में पिता के मुंह से सुनी 2-4 पंक्तियों से चली,.. स्कूल में काव्य प्रतियोगिताओं से आगे चली,.. सिनेमा के गीतो ने भी परवान चढाया,.. कालेज में बहुत अवसर मिले,... किन्तु पारिवारिक जीवन की कठिनाइयों और व्यस्तता के बीच काव्य धारा क्षीण गति से बहती रही,..

विवाहोपरान्त इन सबसे रिश्ता टूट सा गया,.. घर, बच्चे,जीवन की अन्य व्यस्तताओं ने पैरों में बडी सी डाल दी,.. अपनी जिम्मेदारियो को निभाने में वर्ष गुजरते चले गये,.. हां पढना सदा जारी रहा,..। न मैने कविता को छोडा,.. और न ही कविता ने मुझे,... मेरे दर्द और संघर्ष में सतत सम्बल बनी पुस्तकें,...

सही अर्थों में कलम उठाई पिछले चार वर्षों से,.. यूँ कह सकते हैं वरिष्ठ नागरिक बनने के बाद ही मैने जीवन को सही अर्थों में जीना प्रारंभ किया है,... बस इतना ही,...!

ये मत समझो कविता करना, कोई आसाँ होता है
साँसों   की माला में हर इक दर्द पिरोना होता है
जो कुछ हम पर गज़रा है,वो यूं ही नहीं गुजर जाता
कुछ दर्दों को,कुछ जख्मों को,फिर फिर सहना होता है

सुनीता लुल्ला

अनुक्रमणिका

1. परिवर्तन के चक्रवात	7
2. चलूँ पिया के द्वार	8
3. और नहीं,..कुछ और नहीं	9
4. ये ही घर वापसी हुई मेरी	10
5. कहो तुम क्यूँ आये थे?	11
6. सात फेरे	12
7. हाथों में ये हाथ	13
8. एक जीवित आस हो	14
9. खूब लगेगी हाट	15
10. ये मन है	16
11. इक गीत बन रहा है	17
12. चादर अपनी दे रे	18
13. उदास	19
14. मन तू भया कबीर	20
15. किसना! छोड़ो बाँस की पोरी,.	21
16. काँटे पैर उगे	22
17. धड़कनों की बात सुन लो	23
18. बाँसुरी	24
19. घर	25

20. ज्ञान हमको मिला 26

21. एक ही मन है 27

22. मुट्ठी भर एहसास 28

23. प्यार की रेखा 29

24. हृदय सब तोलता है 30

25. है शपथ तेरी 31

26. कान्हा! आज पढो यह पाती 32

परिवर्तन के चक्रवात

परिवर्तन के चक्रवात थे बडे हठीले,,,,
लेकिन फिर से लौटे हैं अब गीत रसीले,,,,,

नया पुराना
सब कुछ है शब्दों में ढाला,,,
भाव-भाव जो
सुप्त कहीं था फिर से पाला,,,
दूर कहीं अब
छूट गये रेतीले टीले,,,, लौटे हैं अब गीत रसीले,,,,

हर अंचल की
हर सुगंध इनमें महकाई,,,,
हर पीड़ा की
टीस छुई पल भर दहकाई,,,
भाव हृदय के
आज हुए फिर से सपनीले,,, लौटे हैं अब गीत रसीले,,,,,

नये सृजन की
कोयल फिर से कुहुक रही है,,,,
नन्हीं पंक्ति
सोन चिरैया टुहुक रही है,,,,
अँगना में फिर
दिख रहे हैं अक्षत् पीले,,, लौटे हैं अब गीत रसीले,,,

चलूँ पिया के द्वार

चाँद चढ़ा है
रात है गहरी
चलूँ पिया के द्वार

फिर भी डर
थोड़ा लगता है
आगे है संसार

मन कुछ कहता
जग कुछ कहता
कैसी है तकरार

पर खुद को
कैसे समझाऊँ
मुश्किल में है प्यार

दर्पण ने ये
रूप सजाया
क्या है वो बेकार

लाज हया से
रक्तिम आनन
लगता है गुलनार

अनबोला सा
मेरा उनका
ठहरा था इकरार

कब तक रोकूँ
अपने मन को
यूँ ही मैं हरबार

हो जाये जो
भी होना है
ये सोचा इस बार

चलूँ पिया के द्वार
आज मैं
चलूँ पिया के द्वार

और नहीं,..कुछ और नहीं

दर्पन देख प्यार आता है
क्या मैं सचमुच सुन्दर हूं

क्या मैं उजली भोर किरण हूं
या बस कल्पित अन्तर हूं

क्या मेरी लहराती अलकें
कोई जाल बिछाती हैं

मेरी ये मदमस्त निगाहें
जाम कोई बन जाती हैं

क्या कोई जादू है मुझमें
मुझे ख़बर है नहीं अभी

मुझे तो बस प्रियतम भाते हैं
मन जाने क्या बात सभी

ठहर जरा वो आते होंगे
मैं भी और संवर जाऊं

बस इतनी ख़्वाहिश है मेरी
प्रियतम को बस भा जाऊं

और नहीं,..कुछ और नहीं,.. बस्स,..

ये ही घर वापसी हुई मेरी

मैं कहीं भी रहूँ मैं कहीं भी चलूँ
पैर मेरे ही कहाँ चलते हैं
मुझको यूँ लग रहा कि पहले से
तेरे कदमों के साथ चलते हैं

हाथ में जब कभी कलम हो मेरा
हाथ तेरा ही थामता है कहीं
जो लिखा मैंने कब कहाँ सोचा
तू मेरी सोच में उतरता है

कहाँ है जिस्म मेरा मैं तो इसके बाहर हूँ
वजूद तेरा ही इसका है हम-वजूद हुआ
कि जब भी हाथ उठे लब पे तू बना है दुआ
कुबूल हो गई और ना कुबूल सी भी कभी

कोई एहसास गुमशुदा लगता
और कभी उंगलियों से छूता है
और कुंडी हवा से खड़के तो
तू ही आया है, ऐसा लगता है

मैं नहीं हूँ मगर मुझे लगता
तूने उठ कर वो द्वार खोला है
और भीतर जो आ गया ऐसे
मैं ही अपने में फिर से लौटी हूँ

ये ही घर वापसी हुई मेरी

कहो तुम क्यूँ आये थे?

मैं खुश थी
मै जैसी भी थी
कभी अकेली, कभी दुकेली,
तुम आये तो बन बैठे कुछ खास,,,,,

वो जो मेरा 'मैं' था
मुझसे छूट रहा था
अपने से ही नाता जैसे टूट रहा था,
तुमसे पहले नहीं थी कोई आस,,,,

तुमने अपने
दुख सुख बाँटे
मैने छाँट लिये सब काँटे,
खुशबू खुशबू फैल रही थी लगता था मधुमास,,,,

थोड़े जाने
पहचाने तुम
पहले बस थे
अनजाने तुम फिर भी तुम पर,
कर डाला था सच्चा सा विश्वास,,,,,

मगर अचानक
मौसम बदला
पता नहीं पर
ऐसा बदला चले गये तुम
दे कर मन को त्रास,,,,, कहो तुम क्यों आये थे ?

सात फेरे

एक फेरा जन्म का है, कोंपलें वो आस की,..
दूसरा बढती में अनमनी सी प्यास की,..

तीसरा अनजान से
अनकहे एहसास का
और चौथा पग धरा था, अब जरा सा पास का,..

पांचवें फेरे में मैं भी
और आगे आ गया
हाथ थामे, तुम भी आईं, भर कदम विश्वास का,..

और छठवां था जो फेरा
वो कसम थी प्यार की
युग-युगों तक जीत की, हार की मनुहार की,..

सातवें फेरे में हम अब
एक पूरे हो गए
अब तलक आधे थे, लेकिन अब समूरे हो गए,..

साथ ये शाश्वत हृदय है
सांस से आगे चले
और उससे और आगे, ज्योत से ज्योति मिले,..

हाथों में ये हाथ

मै भी सोचूँ, तुम भी सोचो, सोचों को एहसास तो दो,..

राह अकेली बहुत कठिन है, हाथों में यह हाथ तो दो,,,,,,

तुमको फूल बहुत प्यारे हैं
मैं मिट्टी की दीवानी
बगिया के सारे फूलों की
मैं ही जानी पहचानी
मिल कर हम कुछ फूल खिलायें
ऐसे कुछ हालात तो दो
राह अकेली बहुत कठिन है, हाथों में ये हाथ तो दो,,,,,,

दूर कहीं नज़रें तेरी हैं
मेरी नज़र में बस तुम हो
मैं तेरे चेहरे को पढ़ लूँ
क्यूँ इतने तुम गुमसुम हो
इक दूजे को हम कुछ समझें
ऐसे एहसासात तो दो
राह अकेली बहुत कठिन है, हाथों में ये हाथ तो दो,,,,,,

तुम चाँदी सोने के कायल
मैं मिट्टी में पली बढ़ी
महानगर से खो जाते तुम
मैं पेड़ों की बेल चढ़ी
आखिर को है, मिट्टी होना
सोंधे से लम्हात तो दो
राह अकेली बहुत कठिन है, हाथों में ये हाथ तो दो,,,,,

एक जीवित आस हो

खो गया सब कुछ अगर
एक जीवित आस हो
आपका अपना खुदी
आप ही के पास हो

आँधियाँ कितनी चलें
दृढ़ मगर विश्वास हो
पाँव धरती पर रहें
सर मगर आकाश हो

भीड़ में रहना नहीं
मीत बस इक खास हो
और कुछ भी ना सही
साँस में मधुमास हो

प्राण में चातक बसे
बस मिलन की त्रास हो
बूँद भी बस इक वही
अनबुझी वो प्यास हो

नैन में वो ही बसे
औ हृदय में वास हो
साँस की अंतिम विलय
बस उसी से रास हो

खूब लगेगी हाट

मन के अँगनारे बिछवाई
उजली धोरी खाट
गेंद रबर की, कंचे गोटी
खूब लगेगी हाट,...

चलो बचपन में जायें
कहीं कुछ इमली खायें
किसे खबर है ऊँची नीची
क्या होती है जात,...
खूब लगेगी हाट,..

थोड़े दिन टी वी ना देखें
सेल फ़ोन भी दूर ही फेंके
सभी मशीनों की फिर यारो
लग जायेगी वाट,...
खूब लगेगी हाट,...

धोरी गैया, काली गैया
डाल कदम्ब की अपनी छैंया
माखन रोटी हाथ में लेकर
मैया देखे बाट,...
खूब लगेगी हाट,...

ये मन है

चट्टानों सा परबत से ये दरक गया है
ध्वस्त हुआ सा ये मन है

सपनों में कुछ और
सृजन है
आपाधापी में जीवन
सब अनबन है
यही युद्ध है, लड़ते-लड़ते
पस्त हुआ सा ये मन है

सुख की चिट्ठी
 मिली न अक्सर
नहीं हाथ में कहीं बचा है
कोई अवसर
क्या इससे कुछ त्राण मिलेगा
सोच सोच कर है भरमाया
त्रस्त हुआ सा ये मन है

छोटा- छोटा जो मिल जाये
पास रखेंगे
आने वाले मौसम की भी
आस रखेंगे
अब तितली सा पंख पसारे
उड़ा जा रहा
मस्त हुआ सा ये मन है

इक गीत बन रहा है

ऐ पुरअसर बहारो
जरा पास आ के बैठो
मेरा हाथ छू के देखो, इक गीत बन रहा है,...

बस फूल तितलियाँ हों
औ घटाएँ बिजलियाँ हों
मल्हार मेघ गाये
धड़कन में गज़लियाँ हों
ओ शबनमी उजालो
मेरा दिल है नर्म मिट्टी
कोई बीज बो के देखो, इक गीत बन रहा है,...

मंदिर में फिर अज़ाँ हो
मस्जिद में घंटियाँ हों
वो फातिमा या राधा
पुरज़ोर मस्तियाँ हों
हो सुबह ख़ुशख़ुशा सी
हर रात पुरसुकूँ हो
लोरी सुना के देखो, इक गीत बन रहा है,...

कोई भैरवी सजाओ
कोई दिलरुबा बजाओ
अक्षत हो आरती हो
कोई देवता मनाओ
हर दिन हो ईदवाला
हर रात हो दीवाली
ढोलक बजा के देखो, इक गीत बन रहा है,...

चादर अपनी दे रे

आज कबीरा
माँग रही हूँ
चादर अपनी दे रे

वो चादर जो तूने ओढ़ी
ज्यों की त्यों धर दीन्हीं
मैंने जाने कैसे ओढ़ी
बहुत ही मैली कीन्हीं
देस पिया के कैसे जाऊँ
पग आगे न बढ़े रे,.. चादर अपनी दे रे,...

पग पग पर ये मन डरपत है
दरसन को हिय भी तरपत है
लाज सरम की बेड़ी पग है
अंतर्मन धरकत है
ऐसी झीनी मोरी चदरिया
भय से प्रान डरे रे,..चादर अपनी दे रे,...

अब जो चादर मिल जाये तो
मैला हाथ न छुइहौं
कोटि जतन कर सिर पर ओढ़ूँ
पग तल मैं ना दैहों
पिय के आगे ठाढ रहौंगी
गरवा जाय लगे रे,.. चादर अपनी दे रे,,,,,,

उदास

आस नहीं कोई फिर भी है
दिल है आज उदास
अनचाही सी, अनदेखी सी
शायद कोई प्यास

यूँ तो सब कुछ हासिल ही है
फिर कैसी है आस
नहीं तीरगी कोई दिखती
चारों ओर उजास

फिर मन मेरे क्यूँ लेता है
दबी दबी सी श्वास
आशाओं को, तृष्णाओं को
भेज दिया वनवास

उस अनंत से जोड़ दिया है
जीवन का मधुमास
बात समझ ले, मनवा मेरे
मत हो आज उदास

मन तू भया कबीर

काँकर पाथर जोड़े कितने
झेली कितनी पीर
मन तू भया कबीर,,,,

साँस- साँस से कलम गही थी
रक्त बीज से स्याही
पोर- पोर से दर्द सहा था
गई पीर तेरी ब्याही
जीवन दर्शन रहा अछूता
केवल रहा अधीर
मन तू भया कबीर,,,,,,,

तेरा राम नहीं मंदिर में
अल्ला की को जाने
बेद पुरान पढ़े कितने ही
कब समझे हैं माने
शब्द अर्थ की गहराई में
बाकी बचा सरीर
मन तू भया कबीर,,,,,,,

मोहन मथुरा तेरे अंदर
तू ही काबा काशी
तीन लोक का सिरजनहारा
तेरे मन का वासी
माला मनका फेंक दिया जब
पाया अंतस धीर
मन तू भया कबीर,,,,,,,

किसना! छोड़ो बाँस की पोरी,...

बड़ा गुमान
इसे है किसना
होठों पर तुमरे
भाग्य नहीं
हम जो छू पायें
दूर खड़े सगरे
फिर भी तुमसे
बँधी हुई है मन की ये डोरी
किसना! छोड़ो बाँस की पोरी,...

जनम भया
उस बरसाने में
ना पाया ब्रजधाम
ऐसा जनम
जो रास न आया
दूर तुम्हारा गाम
तरपत नीर
सदा बहती हैं अखियाँ बरजोरी
किसना! छोड़ो बाँस की पोरी,...

एक बार
अधराँ पे धर ल्यो
साँस साँस से
भर के सुर ल्यो
अंतिम साँस
तेरी साँसों में रह जाये मोरी
किसना! छोड़ो बाँस की पोरी,...

काँटे पैर उगे

सुख लेने जो
हम आये थे
लेकिन गये ठगे
काँटे पैर उगे,...

हम समझे थे
मेहनतकश को फल है मिलता,,,
नहीं पता था
भाग्य रेख में ग़म ही सिलता
स्वप्न दाह से डर कर देखो
हम हैं आज जगे,,,

संबंधो की
सिली रजाई विश्वासों से,,,
खींच वक्त ने
दूर हटाई उच्छवासों से,,,
हम थे हंस
मगर कीड़े ही हमने हाय चुगे,,,,,

न्याय भाग्य का दूर खड़ा था
बेजारी थी,,,,
ताला धन का वहीं जड़ा था
लाचारी थी,,,,
हार सत्य की होती देखी
हमने आज युगे,,,,,

धड़कनों की बात सुन लो

हाथ दिल पर रख दिया है
धड़कनों की बात सुन लो

शब्द ये कहतीं नहीं कि
कान में कुछ घोल देंगी
पर तराज़ू पर हृदय के
नेह सारा तोल देंगी
अर्थ भी होंगे नहीं कुछ
और ही होगा कहीं कुछ , बज रहा है गीत प्यारा,
तुम इसे बस आज गुन लो, धड़कनों की बात सुन लो,...

हो अँधेरा जो कहीं पर
जुगनुओं सी टिमटिमाएं
ये अजन्मी आत्माएँ
बस कहीं से कुनमुनाएँ
द्वार तुम बस खोल देना
अनकहा कुछ बोल देना, हैं कभी काँटों सी चुभतीं,
फूल सा बस आज चुन लो, धड़कनों की बात सुन लो,...,

प्यार के धागे यही हैं
कुछ हैं कच्चे,कुछ हैं पक्के
बाँध लेंगे ये अनंतम्
गर नहीं आये पलट के
कोई रिश्ता या हो चादर
पूर्ण तो होता नहीं है, उलझनें सुलझा लो सारी,
रेशमी सा आज बुन लो,धड़कनों की बात सुन लो,,,,,

बाँसुरी

वो बाँसुरी जो बड़ी दूर है,..सुरीली है
जमीन दिल की कहीं आज फिर से गीली है

वो तेरी याद बिन कहे ही हैचली आई
वही पुरानी धुन जो साथ हमने थी गाई
इक उंगली से उसने तार तार छेड़ा है
छुड़ाऊं उसको मैं केसे बड़ा बखेड़ा है
कहीं से हूबहू ये तुझसी ही हठीली है
जमीन दिल की कहीं आज फिर से गीली है

तुझे पता है कि मैं मुड़ के आ नहीं सकती
करूँ मैं लाख इरादे, ये पा नहीं सकती
कहीं मजबूर है तू दूर शामियाने में
करेगा याद मुझे अपने आशियाने में
जो बाड़ बीच में अपने,बड़ी कंटीली है
जमीन दिल की कहीं आज,फिर से गीली है

पर वो एहसास छुअन का, अभी भी जिन्दा है
परों में जान है, बस कैद में परिन्दा है
खुला आकाश उसकी आँख में बसा है मगर
उसकी किस्मत में ये उड़ान नहीं, उसको ख़बर
पुरानी याद सही, अब भी ये रसीली है
जमीन दिल की कहीं आज फिर से गीली है

घर

बहुत दिनों के बाद मिला है घर मेरे
और खुशी से नैन गए हैं भर मेरे

मन उन्मुक्त परिंदे जैसा उड़ जाता है
उड़े कहीं भी लेकिन ठौर कहाँ पाता है
पंछी जैसे सिमट चले हैं डर मेरे
आज खुशी से नैन गए हैं भर मेरे,,,,,,,

साज़ हृदय का और कहीं क्या बजता है
थमी हवा में कभी कभी ये सजता है
पैर थिरकते, गमक उठे हैं, स्वर मेरे,,,
देख ख़ुशी से नैन गए हैं भर मेरे,,,,,,,

कलम हाथ में यूँ ही बस आ जाती है
अक्षर अक्षर कहती सारे ग़म जाती है
भाव हृदय के शुष्क नहीं, अब तर मेरे
फेर ख़ुशी से नैन गए हैं भर मेरे,,,,,,,,

ज्ञान हमको मिला

ज्ञान हमको मिला, ध्यान हमको मिला
बन्द मन था, कहीं भी खुला ही नहीं
खुल के हम न मिले गर किसी से कभी
मान जो भी मिला, ज्यों मिला ही नहीं

भेद की, भाव की और अलगाव की
बेड़ियों ने हमें कैद ही में रखा
कोई फल जो मधुर जिन्दगी ने दिया
रह गये सोच में, वो नहीँ ही चखा
 विष की बूटी सदा रह गई होंठ पर
रस जो अमृत रहा, वो घुला ही नहीं
बन्द मन था, कहीं भी खुला ही नहीं

कैसी कारा थी मन की जो खुल न सकी
प्रेम बाती किसी मोड़ जल न सकी
रास्ते तो खुले थे, मगर क्या हुआ
दो कदम साथ सबके वो चल न सकी
क्या सही क्या गलत, सोच में रह गये
द्वन्द्व मन की तुला पर तुला ही नहीं
बन्द मन था कहीं भी खुला ही नहीं

यूँ ही चलती रही जिन्दगी हर डगर
छाँव मिल न सकी, न कोई था शज़र
फिर भी चलते रहे, ग़म से पलते रहे
कोई मंजिल नहीं, था अजब ये सफ़र
धूप अब है ढली, हम भी थक से गये
दाग जो भी लगा, वो धुला ही नहीं
बन्द मन था, कहीं भी खुला ही नहीं

एक ही मन है

एक ही मन है, जब दुखता है. उठ जाती है टीस,
कितना अच्छा होता जो ये. मन होते दस बीस,..

शीशे सा ये कभी तड़कता
तितली सा बन पंख फड़कता
जब जब भी ये टूटा है तो
अक्स भी दिखता और दरकता
भाल कभी आधा दिखता है छुप जाता है सीस,
कितना अच्छा होता जो ये. मन होते दस बीस,...

एक छुपा कर रख देती मैं
अंदर दस दीवारों में
धूप इसे कोई न लगती
गहरी गढ़ी दरारों में
ग़म से कभी न बोझल होताहल्की रहती रीस,
कितना अच्छा होता जो ये, मन होते दस बीस,...

कभी फ़र्ज़ ने जकड़ा इसको
दुनिया ने भी पकड़ा
मर्यादा ने बेड़ी बन कर
पग पग पर है रगड़ा
टुकड़े- टुकड़े हुए हज़ारों, अच्छा था वनपीस ,
कितना अच्छा होता जो ये, मन होते दस बीस,...

मुट्ठी भर एहसास

मुट्ठी भर एहसास तुम्हारे आने का लगता है खास
सच बतलाओ, रात ख़्वाब में तुम थे मेरे पास?

भोर हुई तो मैं शबनम सी
चमक रही थी द्रुम दल पर
मीठी मीठी नर्म धूप सी
 गुन गुन करती पग तल पर
एक खुनक सी मस्त पवनियाँ
जगा रही थी पहली प्यास,,,
सच बतलाओ, रात ख़्वाब में तुम थे मेरे पास ?

माथे पर इक लट बिखरी थी
एक छुअन थी गालों पर
मदिर- मदिर वो महक प्यार की
लहक रही थी बालों पर
आँचल तो सूखा था लेकिन
भीगा था एहसास,,,,,
सच बतलाओ, रात ख़्वाब में तुम थे मेरे पास ?

धड़कन भी थी अनजानी सी
छेड़ करे मनमानी
समझ बिचारी, निपट अकेली
बात कोई न जानी
यौवन की ड्योढ़ी पर लगता
आया है मधुमास,,,,
सच बतलाओ, रात ख़्वाब में तुम थे मेरे पास ?

प्यार की रेखा

तुम हृदय के द्वार आये
स्वप्न भी कुछ खटखटाये
साँकलें खुल ही न पायीं
रूबरू देखा नहीं है
हाथ में मेरे, तुम्हारे
प्यार की रेखा नहीं है,,,,,,

आज है ये हाथ खाली
भावना होती सवाली
ये कलम किसकी थी जिसने
दी नहीं मुझको दीवाली
ये हृदय का जोड़ था बस
भाग्य का लेखा नहीं है
हाथ में मेरे, तुम्हारे
प्यार की रेखा नहीं है,,,,,

रंग मेंहदी का न आया
आलता भी ना लगाया
इत्र से मन प्राण को भी
है नहीं मैंने जगाया
कल्पना के सत्य थे तुम
पर तुम्हें देखा नहीं है
हाथ में मेरे, तुम्हारे
प्यार की रेखा नहीं है,,,,,

हृदय सब तोलता है

बोलती है आँख, लब भी बोलता है
पर तराजू पर हृदय सब तोलता है

भाव है निकला कहाँ से, और कितना
दूरियाँ क्या तय करेगा, मेघ जितना
प्रश्न अर्थों के ये बन्धन खोलता है
पर तराजू पर हृदय सब तोलता है

कीमतें लगतीं यहाँ हर बार हैं क्यूँ
जीत के आगे सुनिश्चित हार है क्यूँ
साँस जीवन की कोई क्या मोलता है
पर तराजू पर हृदय सब तोलता है

हाँ कभी संचित, कभी ना में बदलती
सत्य है या स्वप्न, दुविधा में मचलती
इस सिरे से उस सिरे तक डोलता है
पर तराजू पर हृदय सब तोलता है

है शपथ तेरी

है शपथ तेरी, तुझे हर रात चलना
दीप मेरे जल तुझे क्या हो गया है

पथ तुझे आलोक से भरना ही होगा
ये अंधेरा पार तो करना ही होगा
आँधियाँ कितनी ही आयें, जल प्रखर तू
ये महासागर, तुझे तरना ही होगा
नियति ने तेरी यही लिखी कहानी
भाग्य पर तेरे कोई क्या रो गया है ?

नेह तेरा है हृदय, मत भूलना तू
गोद में सुख की मगर मत झूलना तू
है निरन्तर साधना तुझको ये करनी
प्राप्ति कुछ भी नहीं है, झेलना तू
तू है केवल दूत, है कर्तव्य तेरा
प्राप्य तेरा अब कहीं पर खो गया है

पर अंधेरा आज ढल कर ही रहेगा
अब उषा का स्वप्न पल कर ही रहेगा
भोर का तारा कहीं से आ रहा है
जो समय को आज छल कर ही रहेगा
खग कुलों ने गान देखो हैं सजाये
आज कोई रंग सा यूँ बो गया है,,,,,,,

कान्हा! आज पढो यह पाती

सदियाँ बीतीं औ युग बीते
बरस बीत गये , रीते रीते
जाने कैसे , तुम बिन जीते
याद बहुत है आती
ये नही ठकुर सुहाती, कान्हा
ये नहीं ठकुर सुहाती ,,,,,

जो मैं जमुना जल बन जाती
कल-कल छलछल लहरों में मैं
गीत तुम्हारे गाती
लहर लहर बन कूल किनारे
तव चरणों तल आती , कान्हा
ये नहीं ठकुर सुहाती,,,,,,

मंद पवनियाँ मैं बन जाती
वृन्दावन की कुंज गलिन में
तुम्हें ढूंढने आती
तव चरणों के चिन्ह जो पाती
माटी पै बिछ जाती , कान्हा
ये नहीं ठकुर सुहाती,,,,,,,,

और अगर फुलवा बन जाती
अन्तस चीर प्रेम का धागा
माला मैं बन जाती
गल बैंयां मैं डारि झूलती
हृदय तेरे लग जाती , कान्हा
ये नहीं ठकुर सुहाती,,,,,,

और अगर मैं बाँस की पोरी
खोखल यूँ हो जाती
छेद हृदय कर , बाँसुरिया बन
होंठ तेरे लग जाती , कान्हा
ये नहीं ठकुर सुहाती,,,,,,,

मेरा कोई बस न चलता
विरह अगन में, हृदय है जलता
तुम आओगे, ले जाओगे
स्वप्न सदा बस ये ही पलता
एक आत्मा अंश मैं तेरी
तुझमें मैं मिल जाती, कान्हा
ये नहीं ठकुर सुहाती,,,,

कान्हा! ये नहीं ठकुर सुहाती ,,,,,

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सुनीता लुल्ला

जन्म - 02/09/1950, कोलकाता

शिक्षा - एम.ए. हिन्दी, अंग्रेजी, बी.एड.

मो. - 9391173094

ई मेल - sunita.lulla2@gmail.com

विधा - पूर्ण रुपेण काव्य साधना, हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और सिन्धी में ... कविता, गीत, गजल, दोहे, मुक्तक इत्यादि।

कार्यक्षेत्र - व्यवसाय, 35 वर्ष शिक्षण में, 20 वर्ष प्रधानाध्यापिका, 5 वर्ष प्रबन्धिका, अप्रैल 2015 में सेवा निवृत्त। हैदराबाद से प्रकाशित 'सिन्ध क्रोनिकल' मासिक पत्रिकी सह संपादिका, ई पत्रिका 'गज़ल गुंजन' की संपादक मंडल सदस्य।

प्रकाशन - स्वयं का पुस्तक संग्रह हिन्दी और अंग्रेजी में ..।
हिन्दी में प्रथम काव्य संग्रह 'वो मै ही हूँ' मार्च 2016 ।
सिन्धी में गज़ल संग्रह 'खुशबू तुहिंजी यादुन जी' 2016।
हिन्दी गज़ल संग्रह 'कुछ रात कटे' 2017 ।

सम्मान - साहित्य सेवा समिति, हैदराबाद से सम्मानित ।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान इंदौर ।
सिंधी गज़ल सम्मान अमरावती पोएटिक प्रिज़्म, विजयवाड़ा साहित्य संगम संस्थान द्वारा 'उस्ताद शायर सम्मान' एवं रचनाऐं देश की साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-96-4

मूल्य- 55/-